राजनीतिक समाजीकरण
(Political Socialization)

B.A. PART- III
VII PAPER

राजनीतिक समाजीकरण के अंतर्गत समाज के द्वारा सिखायी गई संस्कृति और व्यवहार को शामिल किया जा सकता है। व्यक्ति जब जन्म लेता है तो संस्कृति के नाम पर शून्य होता है किन्तु समाज में रहते हुए और दूसरे लोगों के साथ अंतक्रिया में भाग लेकर वह समाज के तौर-तरीकों को समझने लगता है, समाज की रीति-नीति को जानने लगता है। इस प्रकार व्यक्ति धीरे-धीरे जैविक धरातल से ऊपर उठकर सामाजिक, सांस्कृतिक होने लगता है। अपनी तथा अन्य लोगों की भूमिकाओं और उनके साथ जुड़े अधिकारों और कर्तव्यों का बोध उसे होने लगता है। व्यक्ति के जन्म से ही प्रारंभ होने वाली यह प्रक्रिया या प्रशिक्षण समाजीकरण कहलाता है और समाज में प्रचलित मूल्य, मान्यताओं, आदर्शों के आधार पर जब व्यवस्था समाज को प्रशिक्षित करती है तो उसे ~~जब व्यवस्था~~ ~~समाज को~~ राजनीतिक समाजीकरण कहा जाता है। इस प्रकार संस्कृति मनोवैज्ञानिक पक्ष को तथा समाजीकरण सामाजिक पक्ष को व्यक्त करता है और जिनकी सामुहिक अभिव्यक्ति से सामाजिक राजनीतिक विकास संभव होता है।

Definition (परिभाषा) :—

समाजीकरण की परिभाषा विभिन्न विद्वानों ने इस प्रकार दी है:—

Johnson (जॉनसन) के शब्दों में —

" समाजीकरण सीखने की वह प्रक्रिया है जो सीखने वालों को सामाजिक भूमिकाओं के निर्वाह

करने योग्य बनाती है।" ②

Brown (ब्राउन) के शब्दों में :— "संस्कृति का संचरण और व्यक्तित्व का विकास ये दो समाजीकरण के अर्थ को पूरा करते हैं।"

Young (यंग) के शब्दों में :— "समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रवेश करता है और समाज के विभिन्न समूहों का सदस्य बनता है और जिनके द्वारा उसे समाज के मूल्यों एवं मान्यताओं को स्वीकार करने की प्रेरणा प्राप्त होती है।"

समाजीकरण के माध्यम से व्यक्ति एक जैविक सामाजिक प्राणी के रूप में परिवर्तित होता है नवजात शिशु क्रमशः समाज की उन विशेषताओं को सीखता है जो समाज के मूल्यों और मान्यताओं के अनुकूल हो और सीखने की यह प्रक्रिया शैशव अवस्था से वृद्धावस्था तक आजीवन चलती रहती है किशोरावस्था और युवावस्था में व्यक्ति नई ~~समायोजित करने का प्रयास करता है~~ स्थितियों के अनुरूप अपने को ढालने की और नये परिवेश में अपने को समायोजित करने का प्रयास करता है समाजीकरण के दौरान परिवार, पड़ोस, समाज, शिक्षण-संस्थाएँ, मित्र-मण्डली, संचार माध्यम आदि सभी अपने-अपने ढंग से व्यक्ति के समाजीकरण में अपनी भूमिका अदा करते हैं राजनीतिक क्षेत्र में भी व्यक्ति को भाग

Scanned with CamScanner

लेने समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा प्रशिक्षित होना पड़ता है।

राजनीतिक समाजीकरण – समाजीकरण प्रक्रिया का एक अंग है। जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी और दूसरों की राजनीतिक भूमिकाओं के बारे में परिचय प्राप्त करता है, वह प्रक्रिया जिसके द्वारा राजनीतिक संस्कृति व्यक्तिगत स्तर पर ढलती है, सामुदायिक या सामाजिक स्तर पर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में अवतरित होती है, राजनीतिक समाजीकरण कहलाती है। एक सामाजिक समूह की संस्कृति उस समूह के सदस्यों की मृत्यु के साथ समाप्त नहीं हो जाती है, वरन उस समूह के नये सदस्यों द्वारा उसे सीखा जाता है और इस प्रकार उस समूह के विचारों और विश्वासों का पीढ़ी दर पीढ़ी न्यूनाधिक हेर-फेर के साथ चलते रहना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। सीखने की यह प्रक्रिया जब राजनीतिक संदर्भ में होती है, तो उसे राजनीतिक समाजीकरण कहा जाता है।

Different Agencies of Political Socialization
(राजनीतिक समाजीकरण के विभिन्न अभिकरण)

राजनीतिक समाजीकरण कई अभिकरणों से प्राप्त किया जाता है, जिसमें कुछ ऐसे हैं, जिनसे व्यक्ति को अनजाने ही राजनीतिक प्रणाली, प्रशासन और इनसे सम्बन्धित मूल्यों

की जानकारी प्राप्त हो जाती है राजनीतिक विश्वास, व्यवहार दृष्टिकोण जीवन के प्रारम्भिक चरण में विकसित हो जाते हैं द्वितीय, तृतीय चरणों में निरन्तर उसमें परिवर्तन, संशोधन और अवतरण का कार्य चलता रहता है अतः परिवार से लेकर राजनीतिक पद्धति तक कई औपचारिक अनौपचारिक संगठन समाजीकरण का कार्य करते है

(1) परिवार :—

परिवार समाज और व्यक्ति के बीच एक महत्वपूर्ण संबंधसूत्र होता है परिवार में बड़ों की सत्ता का, नियंत्रण के उपक्रम के अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों के संबंध में बोध कराता है पिता का व्यवहार परिवार के मुखिया की हैसियत से या व्यवस्थापक की हैसियत से परिवार के अन्य सदस्यों विशेष बच्चों के प्रति प्रजातांत्रिक ढंग का भी हो सकता है, और दमनकारी व्यवहार भी हो उठता सकता है इस तरह परिवार का मुखिया या पिता अपने परिवार के संदर्भ में शासक की भूमिका निभाता है और पारिवारिक शासन के संबंध में उनके मूल्य नहीं होते है जो व्यापक समाज के शासन में पाए जाते है

2.) शिक्षण संस्थाएँ :—

समाजीकरण का दूसरा महत्वपूर्ण अभिकरण पाठशाला है नवोदित राष्ट्र में परिवार राजनीतिक समाजीकरण में उतना योगदान नहीं देते हैं, जितना कि पाठशाला, माध्यमिक विद्यालय या विश्वविद्यालय देते हैं

कारण — परिवार के व्यस्क स्वयं संक्रमण की

स्थिति से गुजर रहे हैं, जिस राजनीतिक संस्कृति को उन्होंने बचपन में सीखा और बाद में जीया वह स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बदल गई और उन्हें नई राजनीतिक संस्कृति से प्रशिक्षित होना पड़ा। यही कारण है कि नये राष्ट्रों में स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों पर राजनीतिक समाजीकरण का भारी दायित्व आ गया है।

(3) राजनीतिक दल :—

दल भी राजनीतिक प्रशिक्षण तथा समाजीकरण का कार्य करती है। राजनीतिक दल विचारों की दलाली समाज में और व्यवस्था में करते हैं, जो दलीय सिद्धांत का निरन्तर स्पष्टीकरण, व्यवस्थीकरण और प्रसारण करते हैं वे सामाजिक हित समूहों के प्रतिनिधि होते हैं और व्यक्ति समाज तथा राजनीति के बीच की दूरी कम करते हैं। प्रतियोगी योजना में मतदाता को अधिकाधिक प्रशिक्षित करते हैं राजनीतिक दल जनता को सार्वजनिक प्रश्नों और समस्याओं के प्रति जागरूक रहने की शिक्षा देते हैं वे जनता के सामने समाज की समस्याओं को विभिन्न विरोधी पहलुओं को रखते हैं जिससे प्रजातंत्र के लिए आवश्यक, ~~स्वस्थ~~ और ~~रखते हैं जिससे प्रजातंत्र~~ के चेतनशील वातावरण पनपता है राजनीतिक दलों के माध्यम से मतदाता राष्ट्रीय समस्याओं और उनके हलों को समझकर अपना कर्तव्य निश्चित कर लेते हैं।

4) राजनीतिक व्यवस्था :—

सरकार देश की

जनता के सामने अपनी नीतियों का प्रचार करती है और लोगों को उन नीतियों के अनुपालन के लिए प्रेरित करती है। सरकार विभिन्न माध्यमों से जनता के बीच देश की राजनीतिक और प्रशासनिक स्थिति तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति की जानकारी प्रस्तुत करती है। जिन लोगों पर इसका प्रभाव पड़ता है, उनका राजनीतिक ज्ञान बढ़ता है। समाचारपत्र को महत्वपूर्ण राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय सूचनाएँ, सरकार की प्रेस विज्ञप्तियों सरकारी पदाधिकारियों, मंत्रियों आदि से मिलती है। ~~सरकारी~~ राजनेता जनता के समक्ष राजनीतिक स्थिति का चित्रण करते हैं और लोगों को सरकारी नीतियों का स्पष्टीकरण करते हैं।

5) स्थानीय स्वायत्त संस्थाएँ :-

स्थानीय स्वायत्त संस्थाएँ भी समाजीकरण में योगदान देती है। इससे अधिकाधिक लोगों को प्रशासनिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलता है, यही लोकतंत्र की आधारशिला है। इसके माध्यम से शक्ति का अधिक से अधिक विकेन्द्रीकरण किया जाता है ताकि व्यवस्था के सफल संचालन में अधिक से अधिक लोग सहभागी हो सकें। स्थानीय स्वायत्त शासन व्यवस्था में स्थानीय नेताओं को काम करने का विशेष अवसर मिलता है, उन्हें राजनीतिक और प्रशासनिक अनुभव प्राप्त होता है। स्थानीय जनता स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्वता जैसे शब्दों से परिचित होते हैं और जिन्हें दैनिक जीवन में लागू करते हैं। नागरिकों की स्थानीय संस्थाएँ स्वतंत्र राष्ट्र की शक्ति होती है। स्थानीय शासन

Scanned with CamScanner

नागरिकों में सार्वजनिक कार्यों के प्रति चेतना जगाकर सक्रिय बनाता है।

(6) (6) अन्य औपचारिक, अनौपचारिक, सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है जैसे – धर्म। प्रायः सभी धर्मों में नैतिक, आध्यात्मिक तथा मानव-धर्म की बात सिखायी जाती है अतः धार्मिक संस्थाओं का राजनीतिक अभिवृत्तियों पर प्रभाव पड़ता है। राष्ट्रीय एकीकरण में विशेषकर विकासशील देशों में, युवा आन्दोलनों में राजनीतिक संस्थाओं का भी योगदान रहता है।

(7) राजनीतिक समाजीकरण के संदर्भ में व्यक्ति के व्यक्तिगत या सामूहिक अनुभव का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है जैसे – एक नियोक्ता अपने कर्मचारियों के प्रति जो व्यवहार करता है, उससे मानव प्रकृति के बारे में गहन अन्तर्दृष्टि ग्रहण की जा सकती है।

(8) जनसंचार के विभिन्न माध्यम भी समाजीकरण में योगदान करते हैं। जैसे :– समाचारपत्र, टेलीविजन, रेडियो आदि भी व्यक्ति के मन में विभिन्न प्रकार के मूल्यों का विकास करते हैं। जनसंचार के साधन की नियंत्रित व्यवस्था उनके विचारों को एकसूत्र में बाँधने के लिए बहुत ही प्रभावशील भूमिका का विकास कर सकती है।

(9) राजनीतिक सिद्धांत और विचार भी समाजीकरण में योगदान देते हैं जैसे :– भारतीय राजनीति के संदर्भ में राष्ट्रीय त्योहार का कुछ खास सिद्धांतों के आधार पर मनाया जाना। जैसे – स्वतंत्रता दिवस / गणतंत्र दिवस। इस त्योहार के दौरान हमें स्वाधीनता, स्वराज्य,

Scanned with CamScanner

(8)

स्वशासन आदि के संदर्भ में प्रशिक्षित किया जाता है इसी तरह गणतंत्र, जनतंत्र, समानता, बन्धुत्वता, सहयोग, सहभाग के क्षेत्र में हमें प्रशिक्षित किया जाता है

इस प्रकार राजनीतिक समाजीकरण समाज के विभिन्न मान्यताओं, परम्पराओं का अध्ययन करती है इसमें व्यक्ति शैशवावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक अपने व्यक्तित्व का विकास करता है और समाज में उन्नति के पथ पर अग्रसर रहता है

Scanned with CamScanner